विचार बिन्दु

समय सबसे बड़ा चिकित्सक है, वक्त हर घाव का मरहम है। –कहावत

अकादमिक जगत से परे शोध को नोबेल पुरस्कार मिलना

रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज की प्रेस विज्ञिप्त के अनुसार ;इस वर्ष के आर्थिक विज्ञान के पुरस्कार विजेताओं – डेरॉन ऐसमोग्लू, साइमन जॉनसन और जेम्स रॉबिन्सन – ने देश की समृद्धि के लिए सामाजिक संस्थाओं के महत्व को प्रदर्शित किया है। खराब कानून व्यवस्था वाले समाज और जनसंख्या का शोषण करने वाली संस्थाएं विकास या बेहतर बदलाव नहीं ला पाती हैं। पुरस्कार विजेताओं के शोध से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि ऐसा क्यों है।; अल्फ्रेड नोबेल के नाम पर मिलने वाले अर्थशास्त्र के पुरस्कार को उतनी मान्यता नहीं है जितनी मूल नोबेल पुरस्कारों को। इस पुरस्कार की राशि स्वीडन की वह बैंक अपनी तरफ से देती है जहां नोबेल का का धन निवेशित है। परंतु इन अर्थशास्त्रियों को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होना उन लोगों के लिये भी खुशी की बात है जो अर्थशास्त्रियों पर अकादमिकता पर तंज कसते रहते हैं। यह अर्थशास्त्री अकादमिक नहीं व्यावहारिक तौर पर बताते हैं कि अलग-अलग राष्ट्र समृद्धि के अलग-अलग स्तरों का अनुभव क्यों करते हैं।

संस्थानों के महत्व और इनके गठन के ऐतिहासिक तरीकों पर भी ये विजेता प्रकाश डालते हैं। इन तीन शिक्षाविदों ने अकादमिक जगत की दीवारों को तोड़ते हुए अपनी अंतर्दृष्टि को व्यापक जगत के साथ साझा किया है। उनकी लोकप्रिय पुस्तक, ;क्यों राष्ट्र विफल होते हैं;, बताती है कि जटिल विद्वानों के निष्कर्षों को शब्दजाल पर निर्भर किए बिना सुलभ तरीके से कैसे बात की जा सकती है। उनके काम का दायरा आर्थिक घटनाओं के पीछे की जटिल सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता को समेटे हुए है। उनका मुख्य फोकस इस बात पर है कि सत्ता में बैठे अभिजात वर्ग के लोग किस प्रकार संसाधनों के इस्तेमाल का फैसला करते हैं और आर्थिक नीतियां बनाते हैं। उनका शोध एक बेंचमार्क के रूप में देखा जा रहा है जो अर्थशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों के बीच उपयोगी संवाद को बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि राजनीतिक अर्थव्यवस्था और संस्थागत अर्थशास्त्र में शोधकर्ताओं को दिया जाने वाला यह पहला नोबेल पुरस्कार नहीं है, लेकिन निस्संदेह यह बहुत महत्वपूर्ण है। उनका तर्क है कि चाहे समावेशी हों या शोषक, संस्थाएं ही किसी देश के आर्थिक विकास को निर्धारित करती हैं। इसके साथ इतिहास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि औपनिवेशिक शासन से विरासत में मिली संस्थाएं अक्सर स्वतंत्रता के बाद भी लंबे समय तक बनी रहती हैं।

प्रभावी संस्थाओं को अपनी वैधता की आवश्यकता होती है, नेताओं को अपने लोगों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए, और नागरिकों को एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। जहां पारंपरिक नेता संपत्ति को आबादी के साथ साझा करना अपना कर्तव्य समझ सकते हैं तो वे बिना किसी जवाबदेही के अपने देशों को लूट भी सकते हैं। इसलिए मजबूत संस्थानों का निर्माण न केवल एक तकनीकी चुनौती होती है बल्कि एक राजनीतिक चुनौती भी होती है, जिसके लिए वैध, जवाबदेह नेतृत्व की आवश्यकता को नहीं नकारा जा सकता है।

जैसे-जैसे वैश्विक अर्थव्यवस्था एआई, डिजिटलीकरण और हरित परिवर्तन के साथ बदलती है, नई संस्थाओं की आवश्यकता होती है – विशेष रूप से औपनिवेशिक विरासतों तथा सामंती परिवेश के बोझ तले दबे भारत जैसे देश के लिये। ऐतिहासिक असंतुलनों को ठीक करना समतामूलक विकास के लिए आवश्यक होता है। भारत में हम पाते हैं कि सामंती विरासत आज भी हमारे व्यवहारों को आकार देती है। इसलिए यह समझने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है कि संस्थाएं जातीय विभाजन और शोषण से विखंडित समाजों में कैसे विश्वास का निर्माण कर सकती हैं, और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि नेता उन लोगों के प्रति जवाबदेह हों जिनकी वे सेवा करने का वे दम भरते हैं। इस साल के नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्रियों का काम यह समझने में मदद करता है कि कोई राष्ट्र आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ स्वतंत्रता के ;संकीर्ण गलियारे; में कैसे आगे बढ़ सकता है। आम तौर पर विकास के अध्ययन में शासन, औद्योगीकरण और सार्वजनिक सेवा सुधारों की इच्छा सूची प्रस्तुत होती है, मगर इन अर्थशास्त्रियों का शोध व्यापक-आधार वाले विकास को गति देने और उसे बनाए रखने के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण तत्वों पर केंद्रित है। सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक ताकतों के बीच बातचीत, विशेष रूप से स्वतंत्रता और समृद्धि का संतुलन, उनके सिद्धांत का केंद्र है। उनका विश्लेषण स्पष्ट करता है कि कैसे देश गरीबी और खराब शासन की स्थिति से शुरू करके भी प्रगति कर सकते हैं। बेशक, इस तरह के परिणाम आलोचना से अछूते नहीं रहते और इन नोबेल पुरस्कार विजेताओं का काम भी कोई अपवाद नहीं है। उनके काम को ऐतिहासिक रूप से नियतात्मक या ;यूरोसेंट्रिक; होने के लिए आलोचना का सामना भी करना पड़ा है। लेकिन उन्होंने न केवल अन्य वैश्विक उदाहरणों को भी अपने अध्ययन में शामिल किया है बल्कि कानून से लेकर राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र तक कई विषयों को भी अपने शोध में समेटा है। इसके अलावा, जटिल विचारों को सरल तरीके से प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता ने उनके काम को बहुत प्रभावशाली बना दिया, जिससे उनकी बात अकादमिक जगत से परे व्यापक लोगों तक पहुंचती है। हालांकि कुछ लोग उनके निष्कर्षों के निहितार्थों पर बहस कर सकते हैं, मगर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि उनके शोध ने इस समस्या को, कि स्वतंत्रता और समृद्धि कैसे सह-अस्तित्व में रह सकती है, और कैसे पनप सकती है, समझने के लिए मूल्यवान उपकरण प्रदान किए हैं। इसीलिए इन अर्थशास्त्रियों को नोबेल पुरुस्कार के लिये चुने जाने को उचित तथा अपरिहार्य बताने वाले विद्वान कहते हैं कि विकास अर्थशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र या अर्थशास्त्र के किसी भी उपक्षेत्र पर आप ध्यान केंद्रित कर रहे हों, उनकी अभूतपूर्व अंतर्दृष्टि से बचना असंभव है। उन्होंने विकास के बारे में हमारी समझ को दो तरह से आगे बढ़ाया है।

इस पुरस्कार की राशि स्वीडन की बैंक अपनी तरफ से देती है जहां नोबेल का धन निवेशित है।

सबसे पहले, उनका शोध समृद्धि के दीर्घकालिक निर्धारकों का अनुभवजन्य रूप से पता लगाता है। उन्होंने यह दिखाने के लिए परिष्कृत सांख्यिकीय तरीकों का इस्तेमाल किया कि औपनिवेशिक संस्थाएं आधुनिक समय की आर्थिक विषमताओं के लिए कैसे मंच तैयार करती हैं। दूसरा, उनके काम, विशेष रूप से राष्ट्र क्यों विफल होते हैं, ने विकास को आकार देने के लिए राजनीतिक और आर्थिक संस्थाओं के परस्पर क्रिया के लिए एक रूपरेखा तैयार की। उनका तर्क है कि समावेशी संस्थाएं, जो विश्लेषण और संतुलन प्रदान करती हैं और व्यापक भागीदारी को सक्षम बनाती हैं, देशों की दीर्घकालिक समृद्धि को बढ़ावा देती हैं। इसके विपरीत, शोषक संस्थाएं, जो कुछ लोगों के हाथों में शक्ति और धन को केंद्रित करने के लिए डिज़ाइन की हुई होती हैं, नवाचार को दबाती हैं और समाज को गरीबी के जाल में फंसाती है। उनका तर्क यहीं समाप्त नहीं हो जाता कि ;लोकतंत्र मतलब विकास; होता है। उनका काम अधिक सूक्ष्म है, जो राज्य, समाज और आर्थिक संरचनाओं के बीच व्यापक गतिशीलता की जांच करता है। उनका सिद्धांत है कि ऐसे समाज जहां अभिजात वर्ग आम लोगों से संसाधन निकालने के लिए संस्थानों का उपयोग करते हैं, वे अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पाते, जिससे विकास और वृद्धि सीमित हो जाती है। इन नोबेल विजेताओं के काम की मुख्य आलोचनाओं में से एक है सांख्यिकीय विधियों का उनका उपयोग, विशेष रूप से उनके औपनिवेशिक मूल में, जिसके बारे में कुछ लोगों का तर्क है कि यह ऐतिहासिक विकास की जटिलताओं का सरलीकरण करती हैं। एक और आलोचना यह है कि उनका ढांचा पश्चिमी संस्थानों पर अधिक जोर देता है, विशेष रूप से चीन और भारत के उदय के मद्देनजर, जिनसे उनके कुछ मुख्य तर्कों को चुनौती मिलती है। इसके अतिरिक्त, कुछ आलोचकों का तर्क है कि इन अर्थशास्त्रियों का वैचारिक मॉडल जटिल ऐतिहासिक वास्तविकताओं का सरलीकरण करते हुए जरूरत से ज्यादा ही कुछ करने की कोशिश करता है। संस्थानों के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने वाले अर्थशास्त्रियों को पहले भी नोबेल पुरस्कार दिये जा चुके हैं, जैसे डगलस नॉर्थ, एलिनोर ओस्ट्रोम और ओलिवर विलियमसन। कुछ लोग तर्क देते हैं कि इन तीन विद्वानों का काम इन पहले के योगदानों से बहुत मिलता-जुलता है, इसलिए उन्हें अलग पुरस्कार देने का क्या औचित्य है? इन आलोचनाओं के बावजूद, इन नोबेल पुरस्कार विजेताओं का काम अर्थशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों को जोड़ने वाले अंत:विषय अनुसंधान के लिए एक ऐसा बेंचमार्क माना जा रहा है जो सार्थक संवाद को बढ़ावा देता है और अर्थशास्त्रियों को विकास में संस्थानों की भूमिका को और अधिक गहराई से तलाशने के लिए प्रेरित करता है। लोग मानते हैं कि उनकी पुस्तक 39;व्हाई नेशंस फेल39; जटिल शोध के सुलभ प्रस्तुतीकरण की उनकी क्षमता का प्रमाण है जिसने उनकी अंतर्दृष्टि को बहुत व्यापक लोगों तक पहुंचाया है। उन्हें यह नोबेल पुरस्कार मिलना संस्थानों पर उनके काम को मान्यता देने से कहीं अधिक है। यह उनके व्यापक कैरियर की उपलब्धियों और अर्थशास्त्र और संबंधित क्षेत्रों पर उनके गहन प्रभाव का जश्न मनाना भी है। उनकी विस्तृत पद्धित, ऐतिहासिक डेटा का अभिनव उपयोग और अंत:विषय दृष्टिकोण ने उन्हें समकालीन आर्थिक विचारों के केंद्र में ला दिया है। नोबेल पुरस्कार प्रणाली की अपनी सीमाएं हैं। खासकर यह कि वह कभी-कभी मौलिकता और विचारशीलता को हतोत्साहित करती प्रतीत होती है। लेकिन इस बार अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार विजेताओं की योग्यता पर सवाल नहीं उठाये जा रहे है क्योंकि सबका मानना है कि उनके काम ने विकास में संस्थानों की भूमिका के बारे में हमारे सोचने के तरीके को बदल दिया है और युवा विद्वानों की एक पीढ़ी को उनके रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

दीपावली समकालीन मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में

कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत

दीपावली भारतवर्ष के सर्वाधिक प्रिय और व्यापक रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है, जो अंधकार पर प्रकाश, अज्ञानता पर ज्ञान और निराशा पर आशा की विजय के साथ ही बुराई के अंत और धर्म के पुनरुत्थान का भी प्रतीक है। शताब्दियों से, दीपावली समकालीन मानवीय मूल्यों के अनुकूल और आधुनिक समाज के निरंतर बदलते लोकाचार को दर्शाते हुए विकसित हुई है।

दीपावली का प्रमुख सार अंधकार को दूर करना है, हालाँकि इसका शाब्दिक अर्थ से परे गहरा महत्व है। वर्तमान संदर्भ में, घरों और सडकों को रोशन करने का यह कार्य अज्ञानता, नकारात्मकता और गलतफहमियों को दूर करने का रूपक है। तकनीकी की तेज गति और सूचनाओं के अतिभार के साथ, यह त्योहार अराजकता के बीच स्पष्टता, करुणा और जुडाव की तलाश करने को दर्शाता है।

ऐसी दुनिया में जहाँ गलत और भ्रामक सूचनाएँ अक्सर विभाजन को बढावा देती हैं, दीपावली को सच्चाई साझा करने के आव्हान के रूप में भी देखा जा सकता है। जिस तरह लोग अपने घरों को दीयों से रोशन करते हैं, उसी तरह दीपावली नई बातें सीखने और जागरूकता को प्रोत्साहित करती है, समझ और भरोसे पर आधारित समुदायों को बढावा देती है। दिवाली का उत्सव धार्मिक संबद्धताओं के अतिरिक्त भारत की विविधता में एकता की भावना को भी प्रदर्शित करता है। यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि मतभेदों के बावजूद, हम भारतीय प्रेम, स्नेह, सम्मान और करुणा के साझा मूल्यों हेतु एक साथ हो जाते हैं। आधुनिक समय में, दीपावली समावेशिता का प्रतीक बन गई है। परिवार अपने उत्सवों में शामिल होने के लिए विविध पृष्ठभूमि के दोस्तों को आमंत्रित करते हैं, जिससे आपसी सौहार्द का वातावरण बनता है। यह समावेशिता तेजी से विभाजनकारी सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्यों के विरुद्ध एक सक्षम हथियार है, जो सार्वभौमिक सद्भाव और सांस्कृतिक बहुलवाद के प्रति सम्मान की भावना को पोषित करती है। दीपावली का त्यौहार लंबे समय से दान की प्रथा से जुडा हुआ है, जहाँ लोग अभावग्रस्त लोगों को मिठाई, कपडे आदि बाँटते हैं। दान की यह संस्कृति करुणा के मूल्य को पुष्ट करती है और समग्र कल्याण पर विचार करने तथा उसमें योगदान देने का आग्रह करती है। इस प्रकार, दीपावली सहानुभूति को बढ ावा देने और सशक्त समुदायों के निर्माण के लिए एक उत्प्रेरक भी है।

हाल के वर्षों में, पर्यावरण के अनुकूल तरीकों से दीपावली मनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। पर्यावरण संरक्षण के बारे में बढती जागरूकता ने लोगों को धरती को क्षति पहुँचाए बिना त्योहार का आनंद लेने के वैकल्पिक तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया है। यह परिष्करण न केवल प्रदूषण को कम करने में मदद करता है बल्कि प्रकृति का सम्मान करने के महत्व को भी पुष्ट करता है।

एक सत्य यह भी है कि, दीपावली केवल एक बाहरी उत्सव नहीं है, बल्कि आंतरिक चिंतन का भी समय है। जिस तरह घरों की सफाई और सजावट की जाती है, उसी तरह यह त्यौहार मन से नकारात्मकता और द्वेष को दूर करने, आत्म-सुधार और भावनात्मक लचीलेपन को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। आधुनिक जीवनशैली अक्सर तनाव और तनावपूर्ण रिश्तों से भरी होती है। दीपावली रुकने, चिंतन करने और पिछली अनबनों को दूर करने, नए सिरे से आशावाद के साथ एक नई शुरुआत करने के पल प्रदान करती है। यह आत्म-चिंतन मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास के समकालीन मूल्यों के साथ संरेखित है, जो जीवन के प्रति सचेत दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। निष्कर्षत:, दीपावली, अपने सार में, जीवन, आशा और साझे आनंद का उत्सव है। प्राचीन परंपराओं में निहित होने के बावजूद, यह त्यौहार समकालीन मानवीय मूल्यों को भी प्रतिबिंबित करता है। एकता, करुणा, स्थिरता और आंतरिक विकास के संदेशों को अपनाकर, दीपावली जीवन को रोशन करना जारी रखती है, हमें एक उज्जवल और अधिक सामंजस्यपूर्ण भविष्य की ओर मार्गदर्शन करने के लिए ज्ञान और प्रेरणा प्रदान करती है।

–कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत,
कुलपति, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

प्रधानमंत्री के विजन के चलते लगातार रोजगार उपलब्ध कराने के प्रयास जारी : शेखावत

जोधपुर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से बेरोजगारी को समाप्त कर युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे रोजगार मेलों की श्रृंखला में 13वां रोजगार मेला जोधपुर के पीजी महिला महाविद्यालय में केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्यसभा सदस्य राजेंद्र गहलोत और शहर विधायक अतुल भंसाली मौजूद रहे।

■ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से बेरोजगारी को समाप्त कर युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे रोजगार मेलों की श्रृंखला में 13 वां रोजगार मेला जोधपुर में

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से सरकारी नौकरियों में चयनित 51000 से अधिक अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान करने के उद्देश्य से पूरे देश भर में आयोजित किए गए रोजगार मेले के चलते जोधपुर में भी पीजी महिला महाविद्यालय में रोजगार मेले का आयोजन किया गया,जहां रेलवे डीआरएम पी के सिंह, बीएसएफ आईजी एम एल गर्ग और डाक विभाग के पोस्ट मास्टर जनरल बी एल सोनल भी मौजूद रहे। इस दौरान डाक विभाग,रेलवे,बीएसएफ और एसएसबी में चयनित हुए युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। नियुक्ति पर पाकर युवाओं के चेहरे खिल उठे।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने 13वें रोजगार मेले को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री की युवाओं को रोजगार से जोडऩे के संकल्प के चलते 2021 में जब पहले रोजगार मेला आयोजित हुआ था तब से लेकर के मुझे आज इस 13वें मेंले में शामिल होने का सौभाग्यपूर्ण अवसर मिला है। 2022 से लेकर के पहले रोजगार मेले से पिछली सरकार के या सरकार के पिछले कालखंड में 12 मार्च 2024 को जब चुनाव के आचार संहिता लगी थी उससे पहले जो रोजगार मेला आयोजित हुआ था और जिसमें मुझे स्मरण आता है कि एक लाख से ज्यादा नियुक्ति पत्र दिए गए तब तक कुल मिलाकर के 8 लाख लोगों को ऐसे नियुक्ति पत्र बिना किसी अड़चन के, बिना किसी परेशानी के बिना किसी भेदभाव के पारदर्शी तरीके से परीक्षाएं आयोजित करके और परीक्षा का क्रम पूरा करके इस तरह के रोजगार के पत्र रोजगार मेलों के माध्यम से दिए गए।

इसी अनुक्रम में मैं आज आप सबको एक बार फिर स्मरण करना चाहता हूं देश के प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने एक सर्टेन लेवल तक की पदों की भर्ती में जो इंटरव्यू की बाध्यता थी उस बाध्यता को खत्म करके प्रधानमंत्री ने सर्टेन लेवल तक के पदों में इंटरव्यू की व्यवस्था को ही समाप्त कर दिया और मैं जिम्मेदारी से कह सकता हूं और आप लोग निश्चित रूप से इसमें मेरी बात में अपनी सहमति व्यक्त करेंगे कि इस नौकरी की भर्ती की प्रयुक्त प्रक्रिया में आपको किसी भी तरह के ऐसी सिफारिश की आवश्यकता नहीं पड़ी हो। आपने अपनी योग्यता के आधार पर अपनी प्रतिभा के आधार पर अपने परिश्रम के आधार पर अपने पुरुषार्थ के आधार पर यह नौकरी अर्जित की है। इस अवसर पर राज्यसभा सदस्य राजेंद्र गहलोत ने भी संबोधित किया। **प्रधानमंत्री का जताया आाभार :** रोजगार मेले के समापन के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने रोजगार मेले के माध्यम से युवाओं को रोजगार मिलने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त किया और कहा कि प्रधानमंत्री के विजन के चलते लगातार रोजगार उपलब्ध कराने के प्रयास जारी है और यह सिलसिला अनवरत चलता रहेगा। हरियाणा में पर्ची और खर्ची के आधार पर अब तक सरकारी नौकरियां दिए जाने के मामले का जिक्र करते हुए कहा कि अब हमारी पारदर्शी सरकार द्वारा योग्यता के आधार पर नौकरियां दी जा रही है। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा किअयोध्या के रामलीला मंदिर में रामलला के बिराजने के बाद इस बार पहली दीपावली है और यह पूरे देशवासियों के लिए गर्व की बातहै। **इन्हें सौंपे गए नियुक्ति पत्र :** इस 13वें रोजगार मेले में जोधपुर के 23 अभ्यर्थियों को डाक विभाग में, 15 अभ्यर्थियों को बीएसएफ और 8 भारतीयों को एस एस बी में रोजगार मिला है। इसके साथ ही कई युवाओं को अलग-अलग विभागों में रोजगार दिए जाने के साथ नियुक्ति पत्र सौंपे गए हैं। पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत मंगलवार सुबह दिल्ली से जोधपुर पहुंचे। एयरपोर्ट पर उन्होंने कहा कि नया टर्मिनल बनने के बाद जोधपुर की कनेक्टिविटी देश और दुनिया के शहरों से बेहतर होगी। इसका लाभ हमारे पर्यटन और इंडस्ट्री सेक्टर को होने वाला है। पत्रकारों से बातचीत शेखावत ने कहा कि नया टर्मिनल विकसित होने के बाद बहुत सारी चुनौतियां समाप्त होंगी। जोधपुर की कनेक्टिविटी और बेहतर होगी। जोधपुर अभी अहमदाबाद, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता, जयपुर, मुंबई और दिल्ली से जुड़ा हुआ है। आने वाले समय में जोधपुर देश के अन्य शहरों से जुडऩे के साथ दुनिया के शहरों से भी जुड़े, इस दिशा में भी आगे बढ़ेगा। केंद्रीय मंत्री ने सभी को धनतेरस और दीपावली की शुभकामाएं भी दी।

धनतेरस के साथ हुई दीपोत्सव की शुरुआत

भीलवाड़ा। दीपोत्सव की शुरुआत मंगलवार को धनतेरस के साथ हो गई। औद्योगिक नगरी के बाजार सज-धजकर तैयार हो चुके है। बाजार में खरीदारी की शुरुआत भी हो चुकी है। इस बार भी वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम, कपडे और फर्नीचर की डिमांड ज्यादा है। 31 अक्टूबर को दीपावली और 1 नवंबर को रामा-श्यामा के लिए नए कपडे खरीदने वालों की भीड बाजार में नजर आने लगी है। दुकानों के बाहर लगी हुई रंग-बिरंगी झालरें, कैंडल, एलईडी बल्ब और अन्य सजावटी सामान ग्राहकों का ध्यान अपनी और आकृषित कर रहे हैं।

शहर के चित्रकूट धाम, श्रम कल्याण केंद्र, लेबर कॉलोनी व्यापारियों ने पटाखे सजा दिए हैं। पटाखा व्यापारी संजय बताते हैं कि इस बार कम आवाज वाले और इको फ्रेंडली पटाखों की अधिक मांग है। इको फ्रेंडली पटाखों की पैकिंग पर कंपनियों द्वारा विशेष कोड दिया गया है, जिससे ग्राहक पुष्टि कर सकते हैं। बच्चों के लिए मेंढक वाले, आपस में फाइट करने वाले और हेलीकॉप्टर जैसे खास पटाखे उपलब्ध हैं, जो बच्चों को बहुत आकर्षित कर रहे हैं।शहर में पहली बार साढे 3 हजार रुपए का 240 शॉट्स का कलरफुल पटाखा आया है। इसके अलावा 120 शॉट्स का ग्रीन पटाखा, 15 कलरफुल गोटी, माटी अनार, कलर स्पिनर, स्पिनर डीलक्स, मैजिकल टॉर्च स्कर्ट, बच्चों के लिए पबजी गन, हवा ने फायर कर रंग बदलने वाली गैलेक्सी तलवार, 5 शॉट्स धूम सहित कई नए पटाखे मार्केट में हैं। शहर में मुरके, नमकीन की खरीददारी भी बढ़ गई है। इसके अलावा ड्राई फ्रूट, बंगाली मिठाई और देशी घी से बनी मिठाई, काजू कतली, सूखे मावे से बनी मिठाई भी लोगो को काफी पसंद आ रही हैं। मिठाई विक्रेता ने दीपावली के लिए पहले से तैयारी कर रखी है कई सूखी मिठाइयां बनाकर स्टॉक कर लिया है। टू व्हीलर और फोर व्हीलर की बुकिंग इतनी ज्यादा है कि आनन फानन में स्टॉक बढ़ाना पड़ रहा है। सोमवार शाम तक 3000 हजार से ज्यादा टू व्हीलर बुक हो चुके थे। लोगों का रुझान इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) की तरफ है। यही नहीं औद्योगिक नगरी के कपडा व्यापारी बताते हैं कि इस बार लिनन फेब्रिक की सबसे ज्यादा मांग है। महिलाएं बनारसी, कांचीपुरम और सिल्की फेब्रिक्स की साड़ियों ज्यादा पसंद कर रही हैं। सिमर फेब्रिक्स साड़ी का क्रेज है तो वहीं युवाओं में पायजामा कुर्ते की सबसे ज्यादा डिमांड हैं। धनतेरस के मौके पर बर्तनों की दुकान भी सजे चुकी है। नहीं वैरायटी के कई बर्तन बाजार में आये है। उधर सोने चांदी की खरीद भी इस बार काफी अच्छी होने की उम्मीद है। भीलवाडा। दीपोत्सव की शुरुआत मंगलवार को धनतेरस के साथ हो गई। औद्योगिक नगरी के बाजार सज-धजकर तैयार हो चुके है। बाजार में खरीदारी की शुरुआत भी हो चुकी है। इस बार भी वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम, कपडे और फर्नीचर की डिमांड ज्यादा है। 31 अक्टूबर को दीपावली और 1 नवंबर को रामा-श्यामा के लिए नए कपडे खरीदने वालों की भीड बाजार में नजर आने लगी है। दुकानों के बाहर लगी हुई रंग-बिरंगी झालरें, कैंडल, एलईडी बल्ब और अन्य सजावटी सामान ग्राहकों का ध्यान अपनी और आकृषित कर रहे हैं।

शहर के चित्रकूट धाम, श्रम कल्याण केंद्र, लेबर कॉलोनी व्यापारियों ने पटाखे सजा दिए हैं। पटाखा व्यापारी संजय बताते हैं कि इस बार कम आवाज वाले और इको फ्रेंडली पटाखों की अधिक मांग है। इको फ्रेंडली पटाखों की पैकिंग पर कंपनियों द्वारा विशेष कोड दिया गया है, जिससे ग्राहक पुष्टि कर सकते हैं। बच्चों के लिए मेंढक वाले, आपस में फाइट करने वाले और हेलीकॉप्टर जैसे खास पटाखे उपलब्ध हैं, जो बच्चों को बहुत आकर्षित कर रहे हैं।शहर में पहली बार साढे 3 हजार रुपए का 240 शॉट्स का कलरफुल पटाखा आया है। इसके अलावा 120 शॉट्स का ठीन पटाखा, 15 कलरफुल गोटी, माटी अनार, कलर स्पिनर, स्पिनर डीलक्स, मैजिकल टॉर्च स्कर्ट, बच्चों के लिए पबजी गन, हवा ने फायर कर रंग बदलने वाली गैलेक्सी तलवार, 5 शॉट्स धूम सहित कई नए पटाखे मार्केट में हैं।

मेरोप गांव में खडे ट्रक से मिली गीली लकडी

डूंगरपुर। धंबोला थाना पुलिस ने एक खडे ट्रक से गीली लकडी पकडी है। पुलिस ने लकडी से भरे ट्रक को वन विभाग के हवाले कर दिया है। वन विभाग इस पर जुर्माने के कार्रवाई करेगा। धंबोला थानाधिकारी ने बताया कि चौरासी विधानसभा चुनावों की आचार संहिता के चलते अवैध गतिविधियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। इसी के तहत सूचना मिली कि एक ट्रक में लकडिया भरकर तस्करी की जा रही है। इस पर पुलिस की टीम मेरोप गांव के पास पहुंची। जहां ट्रक खडा मिला, लेकिन आसपास कोई नहीं था। गुजरात नंबर के ट्रक की तलाशी ली गई। ट्रक के अंदर गीली लकडी भरी हुई थी। जिसे संभवतया तस्करी के फिराक में थे, लेकिन पुलिस की भनक लगने पर भाग गए। पुलिस ने ट्रक को जब्त कर लिया। पुलिस ने कार्यवाही की सूचना वन विभाग को दी है। जिस पर वन विभाग ने गीली लकडी से भरे ट्रक को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। वन विभाग लकडियों को किस जगह से काटा गया। वहीं, गीली लकडी की तस्करी कहां की जा रही है। इसकी पडताल कर रही है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल को याद किया

भीलवाडा। जिला कलक्टर कार्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में मंगलवार को सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को याद किया गया और राष्ट्रीय एकता के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की गई। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रतिभा देवठिया ने जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता शपथ दिलाई। शपथ ली गई कि "मैं राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूंगा और अपने देशवासियों के बीच यह संदेश फैलाने का भरसक प्रयत्न करूंगा।" इस समारोह का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढावा देना है, जिसके लिए सरदार वल्लभभाई पटेल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने कहा, "सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता और कार्यों ने हमारे देश को एक मजबूत और सशक्त राष्ट्र बनाने में मदद की। हमें उनके आदर्शों को अपनाना चाहिए और राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए।' इस अवसर पर सभी ने सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को याद किया और उनके चित्र पर माल्यार्पण किया और राष्ट्रीय एकता के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 30 अक्टूबर, 2024

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र रात्रि 9:43 तक, वैधृति योग प्रात: 8:51 तक, वणिज करण दिन 1:16 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:43 तक है। भद्रा दिन 1:16 से रात्रि 2:34 तक है। आज धनवन्तरी जयन्ती, नरक और रूप चतुरदशी निमित्त सायं दीपदान तथा आगामी अरूणोदय काल में प्रभात स्नान और दीपदान होगा। चन्द्रोदय प्रात: 5:25 पर होगा। आज मास शिवरात्रि, श्री हनुमान जयन्ती, वैधृति पुण्यं, पदम प्रभु जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:25 तक, शुभ 10:48 से 12:10 तक, चर 2:59 से 4:23 तक, लाभ 4:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:39, सूर्यास्त 5:42

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयास